NH Point-view

गाँव-गोत्र संस्कृति और भारतीय सिनेमा:

वैसे तो बॉलीवुड की महबूब खान निर्देशित "मदर इंडिया" फिल्म कई बार देखी, लेकिन आज जब जहाँ गाँव और गोत्रों की बेसकिमती संस्कृति पर बरगलाने वाले माहौल में इस फिल्म में राधा (फिल्म की मुख्य पात्र) और बिरजू (उसके बेटे) के बीच के संवाद सुने, जिनमें वो बिरजू को गाँव की लड़कियों को छेड़ने पे खबरदार करते हुए कहती है कि "गाँव की सारी लडकियाँ (बेटियाँ) तेरी बहन होती हैं सो अगर आज के बाद गाँव की किसी भी लड़की को छेड़ा तो तेरी जान ले लूंगी", तो पता चला कि पहले के फिल्म निर्देशक धरातलीय संस्कृति की मान्यताओं और मूल्यों को कितनी सच्चाई से परदे पर उतारते थे| जब माँ-बेटे का यह संवाद सुना तो लगा कि चाहे जो वजह रही हो पर महबूब खान को अपनी संस्कृति की बहुत ही गहरी समझ थी और शायद इसीलिए "मदर इंडिया" आज भी भारतीय सिनेमा की कालजयी फिल्मों में सुमार होती है| काश ये हरियाणवी भाषा में "काहल के कुतरू" कहे जाने वाले चुनिन्दा सरफिरे भी इस तथ्य को समझ कृतियाँ बनायें और प्रस्तुती दें तो इनको इनकी सोच से भी कहीं ज्यादा T.R.P. भी मिले और धन भी|

Phool Kumar Malik (22/02/2013)